राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
(An Autonomous Institution of the Ministry of Culture, Govt. of India)

सत्यमेव जयते
Ministry of Culture
Government of India

अभिरंग

अंक : 06 एवं 07 (संयुक्तांक) जुलाई - दिसंबर, 2024

विशेष साक्षात्कार

पद्मश्री सम्मान प्राप्त

निरंजन गोस्वामी

(मूकाभिनय विशेषज्ञ से विशेष साक्षात्कार)

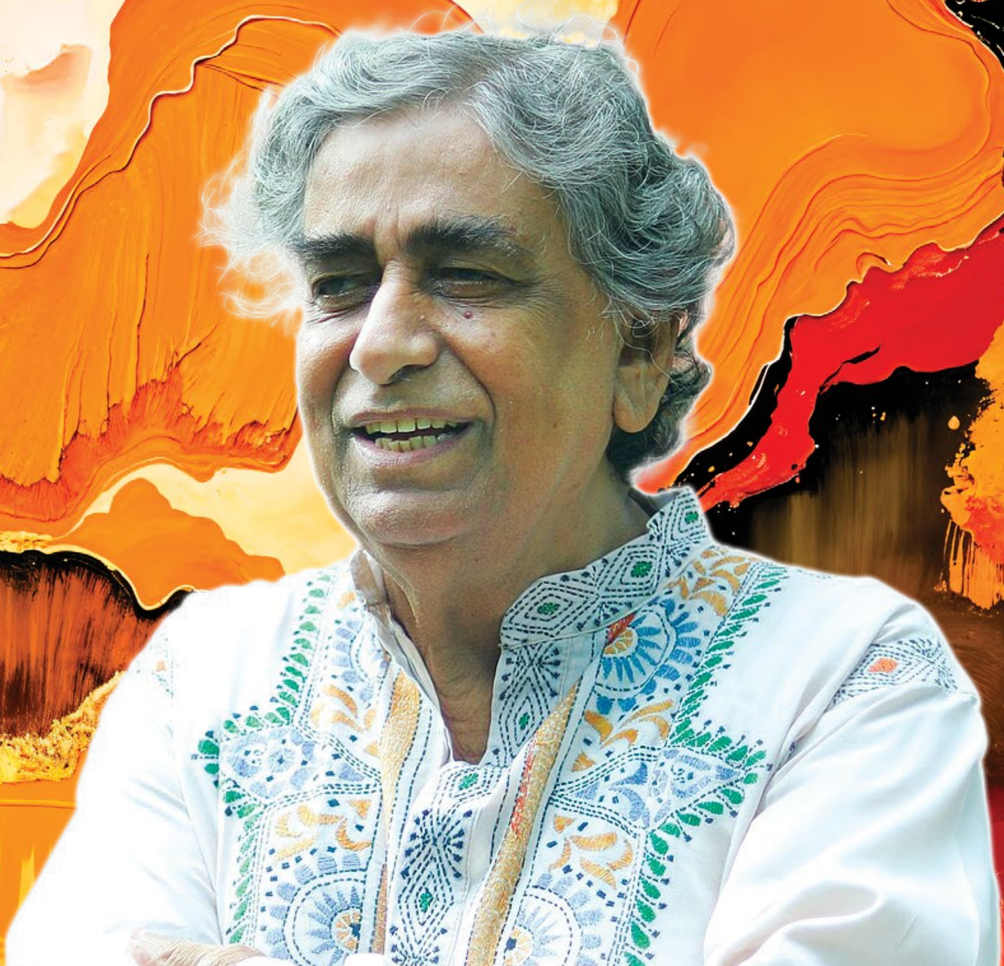

रानावि समाचार पत्र

अभिरंग

अंक : 06 एवं 07 (संयुक्तांक) जुलाई - दिसंबर, 2024

संपादक : प्रदीप कुमार मोहंती
सह संपादक : प्रकाश झा

अभिकल्पन: महिमा अग्रवाल
संशोधन: रमण कुमार सिंह
विक्रय प्रभारी: माधवानंद; सहयोग: नंदिता
कार्यालयी सहयोग: भपाल सिंह एवं रजनी

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
प्रकाशन विभाग, बहावलपुर हाउस, भागवानदास रोड, नई दिल्ली – 110001

फ़ोन : 011 – 23389138 / 23367136 / 23389402 / 23387916
ई-मेल : nsdpublication@gmail.com / abhirang.nsd@gmail.com

श्री चित्तरंजन त्रिपाठी; *निदेशक, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित*

सहयोग राशि : रु. 25/-

पोहोजा प्रिंट सोल्यूशन्स प्रा. लिमिटेड द्वारा मुद्रित

अनुक्रम

- सम्पादकीय / 04
- साक्षात्कार / 05
- अंतरंग (रानावि गतिविधियाँ)
  - » शैक्षणिक विभाग / 11
  - » प्रस्तुति विभाग / 13
  - » रंगमंडल / 14
  - » संस्कार रंग टोली / 18
  - » प्रशासनिक विभाग / 19
  - » राजभाषा विभाग / 20
  - » प्रकाशन विभाग / 21
  - » बुकशॉप / 21
  - » विस्तार कार्यक्रम एवं बाल नाट्य विभाग / 22
  - » रानावि केंद्र
    - *बेंगलुरु केंद्र (कर्नाटक) / 23*
    - *गंगटोक केंद्र (सिक्किम) / 23*
    - *श्रीनगर केंद्र (जम्मू एवं कश्मीर) / 24*
    - *अगरतला केंद्र (त्रिपुरा) / 24*
    - *वाराणसी केंद्र (उत्तर प्रदेश) / 26*
  - » समारोह प्रभाग / 27
  - » विविध आयोजन / 27

सम्पादकीय

नाटक केवल मंच पर बोले गए संवाद नहीं होते — वे समाज की आत्मा के दर्पण होते हैं। वे विचारों के उद्भव, भावनाओं की प्रतिध्वनि और सांस्कृतिक चेतना के वाहक होते हैं। अभिरंग के इस जुलाई-दिसम्बर, 2024 अंक में हम राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की रचनात्मक ऊर्जा को रेखांकित कर रहे हैं, जो जुलाई से दिसम्बर के बीच नाट्य विधा में परिलक्षित होती रही।

यह छः महीनों की अवधि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के लिए सिर्फ एक समय खण्ड नहीं, बल्कि प्रयोग, प्रस्तुति और परिवर्तन की यात्रा रही है। इस दौरान विद्यालय ने न केवल पाठ्यक्रम को सुचारू रखा, बल्कि कई नई विधाओं, तकनीकों और रंगशैलियों को अपनाकर रंगकर्म को समकालीन सामाजिक संदर्भों से जोड़ने का भी कार्य किया है। लोकनाट्य और शास्त्रीय नाट्य शैलियों का समन्वय, बाल एवं युवा रंगमंच की बढ़ती सक्रियता तथा रंगप्रयोगों की विविधता इस सत्र की विशेष उपलब्धियाँ रहीं।

यह समाचार पत्र केवल क्रिया-कलापों का संकलन नहीं, बल्कि नाट्यवृत्त के सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक मूल्यांकन का एक दस्तावेज़ भी है। इस दौरान विद्यालय में नए छात्रों का आगमन, 17वें एशिया पैसिफिक बॉण्ड ऑफ़ थिएटर स्कूल्स फ़ेस्टिवल, रंग षष्ठि: का आयोजन, बच्चों के लिए संडे क्लब का आयोजन आदि कार्य सम्पादित किए गए।

हम इस अंक के माध्यम से सभी रंगकर्मियों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि रंगमंच की यह यात्रा निरंतर प्रयोगशील, परिवर्तनशील और प्रासंगिक है। आइए, इस रंगयात्रा में सहभागी बनें, और अपने नाट्य प्रयासों से समाज को विचार, संवेदना और संवाद की नई रोशनी दें। अंक के लिए हम पद्मश्री सम्मानित श्री निरंजन गोस्वामी के विशेष आभारी हैं, जिन्होंने हमें मुखाभिनय पर विशेष साक्षात्कार दिए।

'अभिरंग' को आप सभी का प्यार मिल रहा है। यह जानकर हम सभी अत्यधिक उत्साहित हैं। हमारी कोशिश है कि हम 'अभिरंग' के माध्यम से आप तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की गतिविधियों को बेहतर तरीक़े से पहुँचा पाएँ। आप सभी का बहुत-बहुत आभार।

प्रदीप कुमार मोहंती
कुलसचिव, रानावि

पद्मश्री सम्मान प्राप्त

दादा निरंजन गोस्वामी से डॉ. प्रकाश झा की बातचीत

साक्षात्कार

दादा, अभिरंग कार्यालय में आपका बहुत-बहुत स्वागत है। आपसे एक जिज्ञासा थी कि आप जब काम करते थे या आपके बचपन के दौर में साहित्य और संस्कृति का कैसा परिवेश था और आप कैसे साहित्य-संस्कृति के प्रति आकर्षित हुए, क्या इस बारे में कुछ बताना चाहेंगे ?

हम जब स्कूल में पढ़ते थे, उस समय बहुरूपी नंदीकार के नए-नए शो होते थे, थिएटर होते थे। जब मैंने हायर सेकेंडरी पास किया, तबसे थिएटर से जुड़े हैं। थिएटर देखे भी है गाँव में और पहले तो स्कूल में थिएटर भी करते थे। वहाँ बहुत ही अच्छे थिएटर होते थे, बहुत कल्चरल प्रोग्राम होते थे, जैसे कि गोविन्द जयंती होती थी, दुर्गा पूजा, काली पूजा के बाद सब फंक्शंस होते थे। उसे जलसा बोलते थे, जिसमें वैरायटी परफॉर्मेंस होते थे। तो एक बार वह वैरायटी परफॉर्मेंस हम देखने गए थे अपनी मौसी और बहन के साथ। वे शिक्षिका थीं। मुझे पहली बार यह देखने का मौका मिला था। उस समय स्कूल में पढ़ते थे, मुझे बहुत आश्चर्यजनक लगा। एक आदमी बिना बोले सब कुछ कह गया! मैं नया-नया था, आठवीं कक्षा का छात्र था। हायर सेकेंडरी पास करके कॉलेज में आए, तो मैं और रूस से आए यूरी चूरिक माइक कल्चरल टीम के साथ जुड़े। मजूमदार बंगाल में परफॉर्मेंस करते थे। वह बहुत से लोगों को परफॉर्मेंस करने का मौका देते थे। योगेश दत्ता जी का परफॉर्मेंस देखा, तो मुझे लगा कि मैं भी कर सकता हूँ। मैं एक और छोटे से ऑर्गेनाइजेशन के साथ जुड़ा था। कॉलेज की भी छुट्टी थी। तीन दिन के फेस्टिवल होते थे, तो उस फेस्टिवल में बच्चों के थिएटर का रिहर्सल होता था। टीचर के आने में देरी होती थी, तो हमें बच्चों को मैनेज करना पड़ता था। बच्चों को मैनेज करने के लिए मैंने उनसे कहा कि मैं परफॉर्मेंस करके दिखाता हूँ, तुम लोग देखो। मैंने परफॉर्मेंस करके दिखाया, तो बच्चों को बहुत अच्छा लगा। मैंने तो बस कॉपी की थी। लेकिन बच्चों को बहुत अच्छा लगा। फिर जब बड़े लोग आए, तो बच्चों ने उन्हें बताया। बड़े लोगों ने भी बोला कि करके दिखाओ। उनके सामने भी परफॉर्मेंस करके दिखाया, तो उन लोगों को भी अच्छा लगा। तीन दिन के फेस्टिवल का शेड्यूल तैयार हो गया, तो एक ने बोला, इधर-उधर से 10 मिनट का टाइम निकाल दो और इसके परफॉर्मेंस एक नया आइटम भी हो जाएगा। बिगनिंग भी था। योगेश दत्त साहब से ज़्यादा उनके कामों से प्रभावित होकर मैं इस विधा की ओर आया।

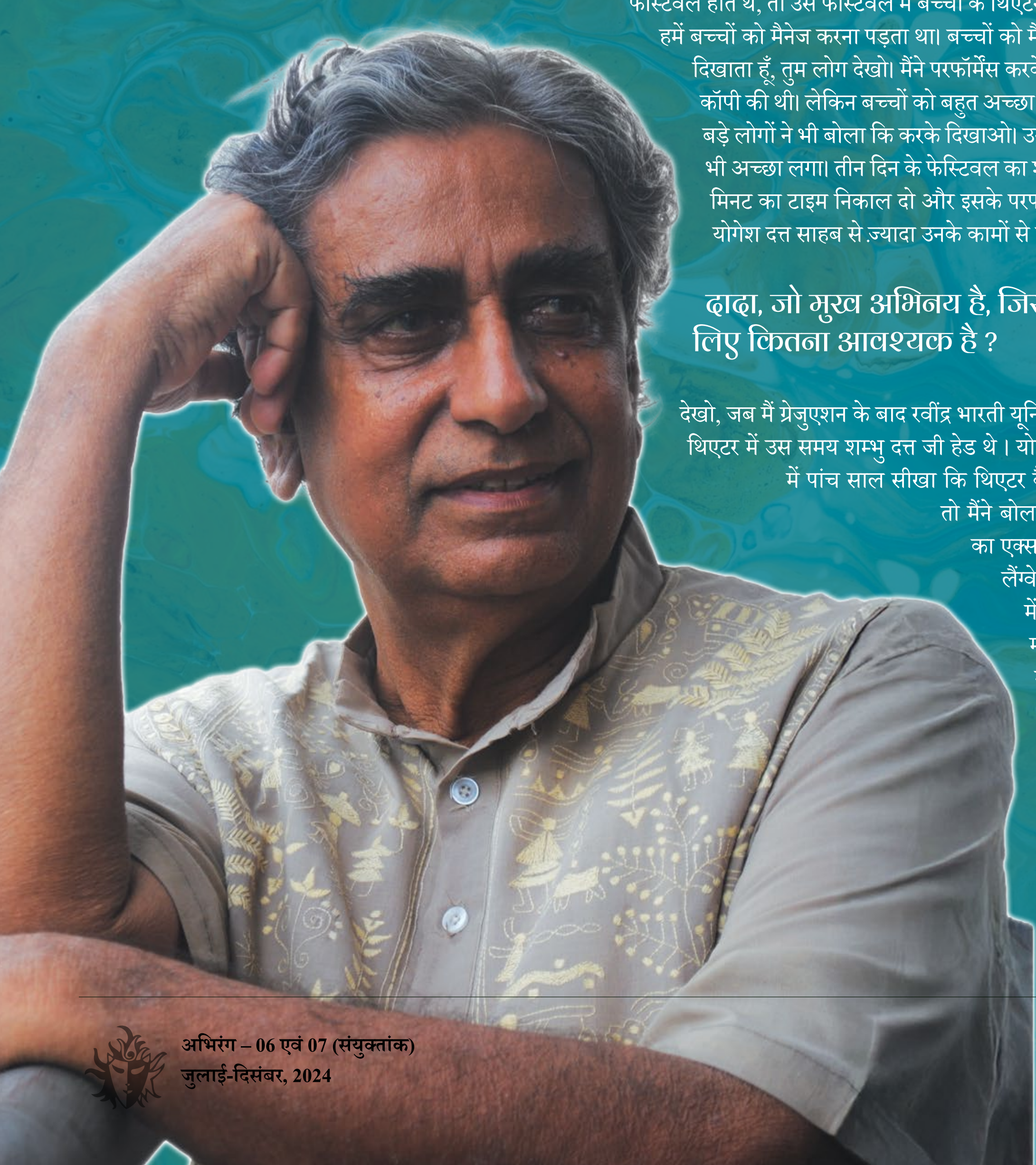

दादा, जो मुख अभिनय है, जिसे हम माइम कह रहे हैं, वह रंगकर्म के लिए कितना आवश्यक है ?

देखो, जब मैं ग्रेजुएशन के बाद रवींद्र भारती यूनिवर्सिटी में थिएटर में मास्टर डिग्री करने के लिए गया, तो थिएटर में उस समय शम्भु दत्त जी हेड थे । योगेश दत्त जी के साथ कुछ दिन सीखने के बाद बहुरूपिए में पांच साल सीखा कि थिएटर कैसे बनाना है। माइम थिएटर पहले तो अकेले करते थे, तो मैंने बोला कि थिएट्रीकल रूप में करेंगे, एक पावरफुल मीडियम का एक्सप्रेशन है। बहुत कुछ कह सकते हैं बिना बोलकर, हमारा लैंग्वेज बैरियर भी नहीं रहेगा। हमारा तो बहुभाषी देश है। माइम में किसी भाषा की जरूरत नहीं है। सभी लोग बोलते थे कि माइम एक यूरोपियन आर्ट है, तुम लोग कॉपी करते हो, तो मैं उस समय कुछ बोल नहीं पता था। बाद में मुझे लगा कि इस तरह थिएटर भी तो यूरोपियन आर्ट है। ज़्यादा दिन से कॉपी करते हैं। कुछ हमारे इंडियन का रूट है कि नहीं है, मूकाभिनय तो हमें नाट्यशास्त्र में मिल गया, क्योंकि नाट्यशास्त्र तो खजाना है एक्टर के लिए । एक्टर बिना गुरु के भी सीख सकता है। सारे एक्सरसाइज लिखे हुए हैं उसमें। आंखों के एक्सरसाइज, मुख के मुखाभिनय एक्सप्रेशन, सब कुछ लिखा हुआ है। एक्टर का काम सिर्फ एक्टिंग करना है। देखना-पढ़ना, समझ नहीं आया,

तो किसी गुरुजी को पूछना है। तो मैंने उसमें स्पेशलाइजेशन कर लिया। डॉक्टर लोग डॉक्टरी पढ़ने जाते हैं, तो स्पेशलाइजेशन है। नाक का, कान का, गले का, हार्ट का-ये सब स्पेशलाइजेशन है। मैं चला नाट्यशास्त्र में स्पेशलाइजेशन करने। नाट्यशास्त्र अलग से पढ़ाते नहीं थे। तो हम फिर वास्तु कल्चरल यूनिवर्सिटी के डांस गुरूजी के पास चले जाते थे नाट्यशास्त्र को लेकर कि सर, यह समझ नहीं आ रहा है, आप समझा दो। कथक गुरुजी भी थे, बड़े-बड़े गुरुजी थे, बहुत सारे गुरुजी के पास जाकर सीखा। मेरा जो संदेह होता था, उस समय बहुत क्रिया करते थे। उस समय लगातार प्रैक्टिस करते थे। नाट्यशास्त्र पढ़ते-पढ़ते बहुत प्रैक्टिस किया। तो उसके बाद मैं क्यों पढ़ने गया यूनिवर्सिटी में, मेरे पास प्रैक्टिस बहुत था।

किस यूनिवर्सिटी में ?

रवीन्द्र भारती यूनिवर्सिटी। मैं तो एक्टिंग पढ़ने गया जो थिएटर में था, स्पेशलाइजेशन था एक्टिंग एवं डायरेक्शन । माइम उसमें 20 अंक का था। माइम था सिलेबस में तो हमने दो साल पढ़ा, बहुत दिल लगाके। इसके बाद जब पास आउट हो गया, तो मैंने फिर अपना ग्रुप बनाया इंडियन माइम थिएटर। उसमें हमने उसका बहुत सारा विंग बनाया। हमने शुरू से एक रेगुलर ट्रेंनिंग वर्कशॉप करने का, लेक्चर डिवोशन का, फेस्टिवल करने का, इस तरह अलग-अलग विंग बनाया। रेगुलर प्रैक्टिस करने के लिए बच्चे आते थे, तो हम एक्सपेरिमेंट करते थे, ये करो, वो करो। नाट्यशास्त्र पढ़ते थे, तो उस एक्सपेरिमेंट के लिए बच्चे मुझे बहुत मदद करते थे। इस प्रकार, धीरे-धीरे मैं उसे थिएट्रिकल फॉर्म में लेकर आया। हमने पहले परफॉर्मेंस किया था 1979 में और फिर फैसला लिया था कि दर्शक मिल जाएँ, तो हम फुल टाइम करेंगे और नौकरी नहीं करेंगे, क्योंकि इस सब्जेक्ट में सबसे पहले भारत सरकार का स्कॉलरशिप मुझे मिला था माइम के लिए। उससे पहले किसी को नहीं मिला था। उस समय मैं डायरेक्टिंग एक्टिंग (माइम) कर रहा था, तो मेरा दिल्ली के कालकाजी में इंटरव्यू लिया गया। एम. के रैना, कमलाकर सोनटक्के और तीन आदमी थे, उस समय मुझे स्कॉलरशिप मिल गया। तो इस तरह, धीरे-धीरे उसको ठीक किया। उसी समय के आसपास वर्कशॉप करना शुरू किया। वर्कशॉप जब शुरू किया, तो अपना मैथड बनाया कि हम कैसे शुरू करें, कहाँ खत्म करें, बिगिनिंग टू एंड, तो उसमें देखा कि प्रैक्टिस बहुत जरूरी है। योगा, प्राणायाम बहुत जरूरी है, बच्चों के लिए तो और भी ज़्यादा जरूरी है। इसके बाद पांव से लेकर सिर तक के कई सारे एक्सरसाइज को हमने डिजाइन करके वर्कशॉप में किया। इसलिए एक्सरसाइज थिएटर के लिए, एक्टर के लिए और टीवी व फिल्म के लिए बहुत जरूरी है। कैमरा में जाकर क्लोजअप में लिया जा सकता है। थिएटर में संभव नहीं है। थिएटर में तो पांच रो के बाद दिखाई नहीं देता है, इसलिए बहुत इंपोर्टेंट है थिएटर ट्रेनिंग में एक्सरसाइज। आंखों का एक्सरसाइज, फिजिकल एक्सरसाइज, आंगिक अभिनय के लिए, सात्विक अभिनय के लिए, भाव रस अभिनय के लिए, मुखाभिनय के लिए नाट्यशास्त्र में आंगिक अभिनय है, जो आंगिक का प्राण है। मुखाभिनय यानी फेशियल एक्प्रेशन तुम्हारा जितना अच्छा होगा, उतना ही बेहतर है। वह आत्मा है। तुम्हें जो कुछ करना है, परफॉर्मेंस करके दिखाना है स्टेज पर जाकर, पढ़ने से नहीं होगा। जितना प्रैक्टिस करोगे, उतना ही अच्छा होगा और दिमाग लगाकर करो, वह फ्री में मिलता है। दिमाग खर्च करो, जितना खर्चा करोगे, उतना बढ़ता है दिमाग। तो इस तरह से हम करते रहे और धीरे-धीरे हमारा सिलेबस पॉपुलर होना शुरू हो गया। जितने सारे यूनिवर्सिटीज हैं, थिएटर डिपार्टमेंट है, पूरा फिल्म इंडस्ट्री, रानावि, रंगमंडल, भारत भवन, रंगायन, पूरा रंगमंडल थिएटर -सब जगह दो बार जाकर पढ़ाकर आया कलाकारों को। तो धीरे-धीरे हम इस तरफ आ गए। परफॉर्मेंस से पैसा कम है, लेकिन टीचिंग में मजा आया । ऑल इंडिया में जितने लोग, जितने माइम ग्रुप्स हैं, सबमें मेरे स्टूडेंट काम कर रहे हैं, नहीं तो स्टूडेंट के स्टूडेंट काम कर रहे हैं, तो थिएटर में मेरा यही योगदान है।

देश में क्या स्थिति है अभी इस माइम को लेकर?

बहुत अच्छी स्थिति है। सब लोग जानते हैं कि माइम बहुत जरूरी है, माइम करना है, माइम सीखना है। मैं जैसा बच्चों को बोलता हूँ कि प्लेराइट सब लोगों को डायलॉग तो नहीं दे पाता। दो-चार लोगों को दिया, बाकी 10-15 लोग स्टेज पर आए, तो वे लोग क्या करेंगे, माइम ही करेंगे। रिएक्शन करेगा, दोनों को देखेंगे, और सुनेंगे और उसके अनुसार रियेक्ट करेंगे, रिऐक्टिंग इज एक्टिंग। माइम करने वाले के पास डायलॉग तो नहीं है, फिर भी बिना बोले हुए वह एक्टिंग करता है। इसलिए इंपोर्टेंट है। और जो करते हैं, हम जो बोलते हैं, उसके साथ-साथ हाथ का स्पर्श भी करते हैं। इसलिए डायलॉग और क्लियर हो जाता है। इसके बाद हमने लोकधर्मी अभिनय, नाट्यधर्मी अभिनय किया। नाट्यधर्मी अभिनय पूरा माइम के लिए है। विदाउट प्रॉप्स विदाउट प्रॉपर्टी तुम्हें एक्टिंग करना है, उसे नाट्यधर्मी कहा जाता है। तो हमारा जो रूट है वह बहुत पुराना है 2500 साल पुराना नाट्यशास्त्र भी है। और उससे 2500 साल से जुड़ा होगा, करते रहते हैं। बाद में भरतमुनि का नाट्यशास्त्र आदि बहुत सारी किताबें हमने पढ़ीं ।

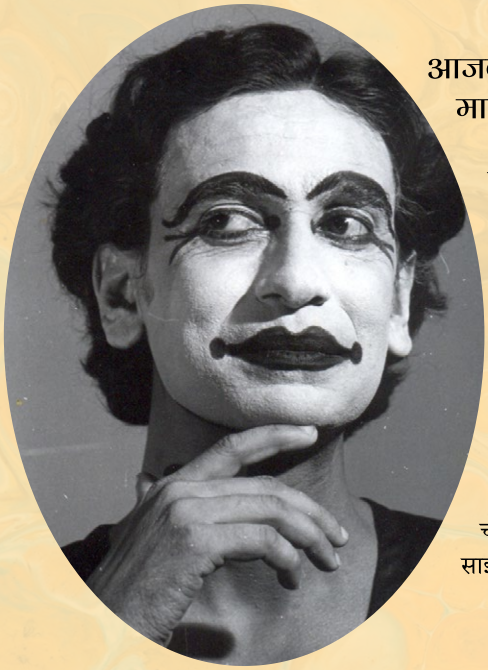

आजकल एक शब्द है पैंटो माइम, माइम तो माइम है, लेकिन पैंटो माइम और माइम में क्या अन्तर है ?

एक ही है, डिक्शनरी में अन्तर नहीं है। नाम अलग है। पैंटो माइम जो अभी होते हैं, उसे पैंटो माइम कहा जाता है। क्रिसमस के टाइम दिसंबर में लंदन में होगा, तो उसको बोलते हैं क्रिसमस पैंटो माइम। उसमें तुम्हारा कैरिकेचर ड्रम फूल माइम मिमिक्री, सब लोगों को इंटरटेनमेंट मिलता रहे, उसको पैंटो माइम कहते हैं। क्रिसमस पैंटो माइम, लेकिन डिक्शनरी में देखोगे, तो कोई अन्तर नहीं मिलेगा। एक ही हैं दोनों। जैसे एक आदमी के दो नाम हैं। कोई अन्तर नहीं। बिना बोलकर एक्टिंग करना है, विदाउट प्रॉप्स काम करना है।

माइम के लिए कोई ग्रामर भी है क्या ? ये चीज होना चाहिए, तब माइम होगा ?

उसमें जो है न, करने के टाइम यू हैव टू फिल द इमेजिनरी ऑब्जेक्ट्स लाइक रियल ऑब्जेक्ट्स। आपको फीलिंग होना चाहिए, आप देखोगे तो ऑब्जेक्ट को देखोगे। जो हम रियल लाइफ में करते हैं, उसको फील होना चाहिए, जैसे हम चाय पी रहे हैं, यह रिएक्शन होना चाहिए। यह माइम है, आत्मा है। आपने बिना बोले कुछ कर दिया, तो माइम नहीं होगा। साइज , सेप, पोजीशन ये सब करके दिखाना है।

कहीं माइम हो रहा है, फेस इन्वाइट करना है, अलग-अलग ब्लैक ड्रेस पहनना है, व्हाइट ड्रेस है, कलर पहनना है, ये जरूरी है ?

ये सब जरूरी नहीं है। जरूरत नहीं, ब्लैक ड्रेस हमारे देश में कौन कहाँ पर पहनता है। कोई पहनता है, कहाँ से आया, मुझे भी मालूम नहीं। अभी तक मालूम नहीं है। मुँह में मेकअप करने का तो चलो ठीक है, लेकिन जब हम थिएट्रिकल फॉर्म में करते हैं, जरूरत नहीं है करैक्टर के हिसाब से। वह मेकअप करके भी कर सकते हो। लेकिन माइम की जो टैक्निक्स है, वह टैक्नीकल रूप में करना पड़ेगा। जैसे बताया कि सिगरेट पीना है, पानी पीना है, मैटेरियल को फील करना है और करके दिखाना है। आपने पानी पिया, इतना पी लिया, दूसरी बार पीना पड़ेगा, तो हाथ वहाँ तक ले जाना पड़ेगा। हाइट, लेवल, पोजीशन ये सब फील करना पड़ता है। जैसे देखा, एक धागा है, हम फील कर रहे हैं, तो इसलिए कि तुम फील कर रहे हो, हमारे हाथ में कुछ नहीं है, लेकिन हम फील कर रहे हैं। हम वाचिक अभिनय भी करते हैं, माइम में वाचिक अभिनय के डायलॉग को हम बाहर आने नहीं देते हैं। ध्वनि नहीं होनी चाहिए।

यदि ध्वनि नहीं होनी चाहिए, तो ये रंगकर्मी के पीछे संगीत का प्रयोग करते हैं ?

करते हैं संगीत, लाइट्स का, सब कुछ करते हैं। थिम म्यूजिकल, एक्शन म्यूजिकल. केवल ध्वनि नहीं होनी चाहिए, एक्टर की ध्वनि नहीं होनी चाहिए। माइम का तकनीक पूरा होना चाहिए। और भाव रस, आंगिक अभिनय, वाचिक अभिनय में लोग बोलते हैं, मुँह नहीं खोलना होता है, हम कहते हैं हम मुँह नहीं खोलेंगे, तो वो एक्सप्रेशन नहीं आएगा, मुझे डर लगा, मुँह खुल गया। वह गलत है, लोगों को मालूम नहीं है।

आज के संदर्भ में माइम कितना इंपोर्टेंठ हो गया है ?

बहुत इंपोर्टेंट है। बाहर की तकनीक क्या है इंस्ट्रूमेंट म्यूजिक, लाइट्स नहीं है, अभिनय सबसे महत्वपूर्ण है। एक्टिंग अपने शरीर और मन से। शरीर और मन, दोनों उसमें बहुत इंपोर्टेंटेंट है। बहुत कुछ है, जैसे नाट्यशास्त्र में कभी-कभी हम पूरा डायलॉग नहीं बोलते हैं। कुछ एक्सप्रेसन करते हैं, तो डायलॉग नहीं है। उस हिसाब से माइम बहुत जरूरी है, आज के टाइम में। कोई भी बड़ा एक्टर देख लो, सिर्फ डायलॉग नहीं बोलते।

जैसा कि आपने कहा. ठेलीविजन, फिल्म बढ़ता जा रहा है। फिल्म अब मोबाइल तक आ गया है। आपने माइम को जीवन से लेकर पद्मश्री तक पहुँचाया है, एक लम्बा सफर किया है। अब क्या अपेक्षाएँ है ?

मैंने सोचा था कि मैं इतना ट्रैवल नहीं कर पाऊंगा, जब उम्र हो जाएगी। इसलिए मैंने गवर्नमेंट से जमीन मांगा था वेस्ट बंगाल गवर्नमेंट से, तो मुझे जमीन दिया साल्ट लेक में। पैसा नहीं था हमारे पास। फिर कुछ एम..पी. लोगों से रिक्वेस्ट किया, तो एम.पी. लैड फंड से पैसा दिया। अपना पैसा जोड़कर इंस्टीट्यूट बनाया, जिसे नाम दिया नेशनल माइम इंस्टीट्यूट। वहाँ हम बच्चों को हम पढ़ाते हैं1 साल का कोर्स है पी.जी. डिप्लोमा कोर्स। जो प्रोफेशनली एक्टिंग करना चाहते हैं उनके लिए एक शॉर्ट कोर्स है 3 महीने का, कम समय में बच्चों को बता देना है कि जिसके पास टाइम नहीं है, पर प्रोफेशनली काम करते हैं , अच्छा है ट्रेनिंग देते हैं। यह जो हमारा सिलेबस है, इसमें सुबह 6 बजे से रात 8 बजे तक क्लास चलता है। इसमें से हम ट्रेनिंग देते हैं एक्टिंग का, शरीर का, एक्सप्रेशन का। आंखों का एक्सप्रेसन, तुम्हारा सब कुछ आंखों में होना चाहिए, आंखों में गुस्सा होना चाहिए, आंखों में प्यार होना चाहिए, आंखों में करुणा और दुख होना चाहिए, सब आंखों में होना चाहिए। आप आंखों से करोगे, तो आवाज गले से सही जगह से निकलेगी, डायलॉग भी सही जगह से निकलेगा। अभी मैं कल सुनील पोखरी पोखरियाल की बीवी से मिला था, वे लोग फेस्टिवल कर रहे हैं अभी सात दिन का, भारत रंग महोत्सव करेंगे नेपाल में, मुझे देखकर आए, पांव छुआ। हम तो पहचाने नहीं। कहने लगे, कैसे हो दादा कैसे हो। आपका एक स्टूडेंट था विजय बराल। मेरा फर्स्ट बैच हीरो का परफॉर्मेंस पाठ किया, कितना करोड़ रुपया कमाया। वह बोल रहा था, जिसे सुनकर बहुत आनन्द हो रहा था। वह सबसे बेस्ट स्टूडेंट था। क्लास में सबसे पहले आता था। एक क्लास मिस नहीं किया। एक बार दिवाली की छुट्टी दी थी। विपासना करके कुछ होता है, वहाँ जाकर एक कोर्स कर लिया। ये प्रोफेशनल था झाड़ू, पोछा करता था,, बोलना नहीं पड़ता है। तभी आज ऊँचे लेबल पर पहुँच गया है विजय बराल।

दादा ! इससे संबंधित कुछ किताबें उपलब्ध होंगी भारत में, कुछ हैं ऐसी जो... ?

ऐसा कुछ खास नहीं है। अभी मैं कोशिश कर रहा हूँ इस साल लाने का बुकफेयर में । उससे कुछ होगा, लेकिन किताब से नहीं होता है, किताब से आप स्वीमिंग नहीं सीखते।

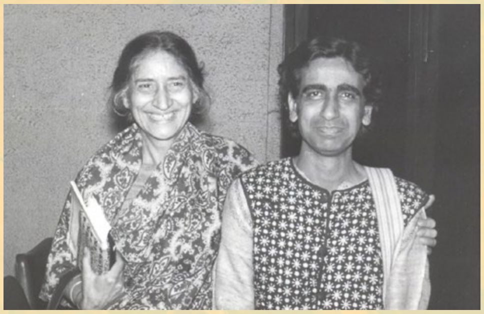

जैसे कि उसमें यह जानकारी हो कि उसकी उत्पत्ति कब हुई, कैसे हुई, कहाँ-कहाँ इसका उपयोग हो रहा है। इसकी एक थिएट्रिकली जानकारी हो लोगों को, जैसे कि जो प्रैक्टिस नहीं करने वाला है, लेकिन उसे इसका ज्ञान हो। हम प्रोफार्मर नहीं हैं, लेकिन हमें इसके बारे में थोड़ा ज्ञान चाहिए। या मैं कहीं जाऊं, तो समझ समझ जाऊं कि यह माइम चल रहा है। ऐसे कई लोग हैं देश में, जो करते नहीं है, लेकिन उन्हें ज्ञान चाहिए ?

इस तरह से बहुत सारे आर्टिकल लिखे हैं मैंने मूकाभिनय करूँ, कैसे करूं, तैयारी कैसे करूँ, मैं करना चाहता हूँ, मुझे क्या-क्या करना है। उसे भी प्रकाशित करेंगे। कुछ थिएटर गेम्स पर एक किताब लिखी थी। उसे पढ़ने के बाद लगता है कि नहीं, उसको ठीक करना पड़ेगा। पब्लिश नहीं कर पाएँगे। ऐज ग्रुप के हिसाब से अलग-अलग करने पड़ेंगे, लेकिन वह भी एक अच्छी किताब है।

अभी जो देश में ट्रेनिंग सेंटर है-ड्रामा का, थिएटर का। उसमें इसको कितना अपनाया गया है?

माइम तो अपनाया गया है, लेकिन सिखाने वाला नहीं है। प्रॉब्लम तो यह है, जैसा हमें अलकाजी ने बोला था, जब मैं इंटरव्यू देने आया था। उस समय 1976 में कि देखो, हम एनएसडी में माइम सिखाते हैं। उन्होंने कहा, तुम बाहर से सीखकर आओ, ट्रेनिंग लेकर आओ, तो हम तुम्हें ले लेंगे। तो हमें स्वामीनाथन करके कोई थे डिप्टी सेक्रेटरी कल्चर, उन्होंने मुझे लिखकर दिया। मैं पीछे खड़ा रहा, पीछे से कागज लिया। लिख दिया। तो उस समय गवर्नमेंट का स्कीम हो गया था कि हम आर्ट एंड कल्चर में ऐसा नहीं करेंगे, जो होगा सारा टेक्निकल होगा, जैसे- कंप्यूटर, उसमें ज़्यादा हो रहा था। स्वामीनाथन बोला, मैं तो अभी रिटायर होने वाला हूँ। आप अल्का जी से संपर्क रखो, वही आपकी मदद कर पाएँगे। अल्का जी बोले, बिना सीखे कुछ नहीं होगा, गलत सीखने से कुछ नहीं होता। आपको कोई गलत सिखाए, तो वह टीचर नहीं है। अभी मिनिस्ट्री ऑफ में कल्चर सेक्रेटरी का एजुकेशन हुमन रिसोर्स है, उसको रिक्वेस्ट किया कि सर हर माइम स्कूल में एक टीचर होना चाहिए। वह बोले, हम तो कर देंगे, टीचर कहाँ हैं? ये सही है, जैसा कि सारे माइम स्कूल में एक टीचर होना चाहिए। तो कोलकाता में एक लड़का आया मेरा स्टूडेंट सुभेन्दु, वह माइम टीचर है और कुछ नहीं करता है। सिर्फ माइम सिखाता है बच्चों को, तो ऐसे नौकरी भी मिल जाए, तो अच्छा है। बाकी शो परफोमेंस भी करते हैं, पढ़ाते हैं जिससे पैसा भी आ जाता है, रेगुलर इनकम हो जाती है, तो ऐसा काम मिल जाएगा तुम्हें।

दादा, एक जिज्ञासा है कि जो मूकबधिर स्कूल के टीचर होते हैं उनकी शिक्षा में और माइम की शिक्षा में कितना अन्तर है ?

उसमें तो सिर्फ हिस्ट्री, ज्योग्राफी, बंगाली लैंग्वेज पढ़ाते हैं, आसन कराते हैं। अन्तर कुछ नहीं है, ज़्यादा-ज़्यादा इंग्लिश मीडियम स्कूल होता है। उसमें भी हमने कुछ दिन वर्कशॉप कराया था, क्लासेस लिए थे, लेकिन मैंने देखा है कि उसमें क्रिएटिविटी भी सभी बच्चों में नहीं होती है। मेरे पास अब भी तीन-चार बच्चे हैं, जो हमारे साथ काम करते हैं, लेकिन सब में क्रिएटिविटी नहीं होती है। जब माइम का ट्रेनिंग होगा, तो क्या होगा कि कल्चरल ट्रेनिंग हो जाती है और साथ-साथ वोकेशनल ट्रेनिंग हो जाती है। मेरा एक स्टूडेंट है। उसने एलआईसी के लिए बहुत पब्लिसिटी परफॉर्मेंस किया है, तो उससे उसका संसार भी चल जाता है और परफॉर्मेंस भी हो गया, वोकेशनल भी हो गया और कल्चरल एंटरटेन भी करता है। अभी उसका अपना ग्रुप भी है, जहाँ वह बच्चों को सिखाता है। उसे राष्ट्रपति अवार्ड में मिले हैं। क्रिएटिव डेप्थ पर्सन इन सेल्फ प्रोफेशन ऐसा कुछ।

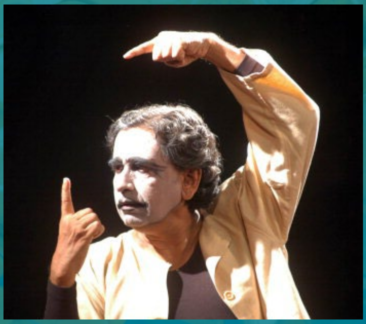

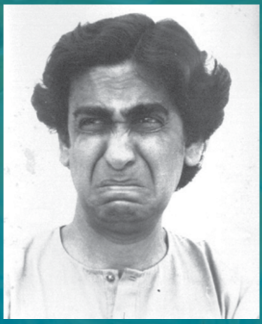

क्या वह माइम कराते हैं ?

माइम करते हैं, पब्लिसिटी करते हैं, सिखाते हैं, सब कुछ करते हैं। बहुत अच्छे हैं अमेरिकन और इंडियन, दोनों लैंग्वेज भी जानते हैं। वह जो माइम का एक्सरसराइज है, माइम का जो इम्प्रोवाइजेशन है, उसमें से बहुत कुछ बच्चों को सिखा सकते हैं।

इसका सोल्यूशंस कैसे होगा कि इंस्टीट्यूट नहीं हैं, जहाँ सिखा सकते हैं। इसकी वजह से कहाँ टीचर को रखा जाए, इसको कैसे शॉर्ट आउट किया जाएगा ?

मुझे पता नहीं है कि आपके इंस्टीट्यूट में कितने लोग माइम करेंगे। सब लोग तो माइम आर्टिस्ट नहीं बनेगा। इनमें से दो-चार बन जाएगा, लेकिन माइम जैसा तकनीक, जो सबको मालूम है, दस गवर्नमेंट ऑर्ट कॉलेज है, उसमें दस साल में एक कलाकार निकलता है और बाकी सब लोग ऑर्ट जानता है। कलर के बारे में नॉलेज है, ड्राईंग-स्केच के बारे में नॉलेज है, सब मालूम है, लेकिन क्रिएटिविटी को लेकर कुछ ज्ञान तो, हो गया। उसका उपयोग अपने जीवन में कर सकते हैं। इसलिए मैंने कहा कि माइम सीखो, तुम्हारे अन्दर कॉन्फिडेंस आ जाएगा कि मुझे आता है। एक आया मेरे पास 2020-22 बैच का, पांव छुआ और रोने लगा, सर इतने साल हो गए, कोई गुरु नहीं मिला। पहली बार ऐसी जगह आया, जहाँ गुरु मिला । फिर उसने कहा कि पोस्टर बनाना शुरू करूँगा।

क्या नाम है उसका ?

उत्कर्ष ठाकुर कुछ ऐसा नाम है । हरियाणा का है, उसे थिएटर का कोई नॉलेज नहीं है। पीएसडी में पढ़ने गए थे, सेलेक्शन भी हुआ था। तो वहाँ उसे तीन-चार स्टूडेंट मिले, उसने बताया कि जाओ, वहाँ से सीख के आओ। तुम्हें अगले साल मौका मिलेगा । हम लोगों को मिल गया। हम सर से पढ़कर आए । मुझे आशा है कि मैं और दस साल काम करूँगा। कुछ बच्चों को हम सिखा के जाएँगे। मैं कहूँगा कि तुम अपना एक ऑर्गेनाइजेशन बनाओ और रेगुलर काम करते रहो।

अभी-अभी आपको टैगोर फैलोशिप मिला है भारत सरकार की ओर से, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के साथ भी आपका संबंध है, तो इसका सब्जेक्ट क्या है ?

मेरा सब्जेक्ट है रवीन्द्रनाथ टैगोर का जो प्लेज है - भाव-रस रवीन्द्रनाथ टैगोर्स प्ले में दिखाया है। ऐक्टर कैसे उसकी डिलीवरी करेंगे, एक्टिंग करने के पहले एक्टर रस को एंजॉय करता है। उसके चेहरे पर भाव पैदा होता है। वह भाव देखकर दर्शकों के मन में भाव पैदा होता है। उसके बाद रस एंजॉय करता है, तो क्या हो गया रस-भाव। रस भाव कैसे हम करेंगे। आगे-पीछे दर्शक कुछ नहीं जानते, तो मेरा डायलॉग है, मैं कौन हूँ, मेरा एटीट्यूड क्या है, मैं किस भाव से डायलॉग बोल रहा हूँ, ये हमें पता होना चाहिए। दर्शकों को पता होना चाहिए। इसके लिए मैं एक किताब लिखूँगा।

अपको धन्यवाद दादा ।

शैक्षणिक विभाग

रानावि प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के छात्रों की गतिविधियाँ

रानावि तृतीय वर्ष के छात्रों की गतिविधियाँ :

- इस समयावधि में तृतीय वर्षों के छात्रों को परिकल्पना और निर्देशन, अभिनय, यथार्थवाद, सौंदर्यशास्त्र, एरियल विषय, दिशा-निर्देशन, गति संचालन, नृत्य संरचना, नाट्य लेखन आदि विषयों का अध्यापन कराया गया।
- उपर्युक्त विषय-अध्यापन के लिए विदेश के विशेषज्ञ ऑस्ट्रेलिया के डॉ. पीटर कुक को आमंत्रित किया गया था तथा देश के जाने-माने विशेषज्ञों में श्री विक्रम शर्मा, श्री रेहान इंजीनियर, श्री अनीस सिद्दीकी, विदुषी चड्ढा, श्री कौस्तुभ दास, श्री राजा आनंद, श्री अमितेश ग्रोवर, श्री जॉय मितेइ, श्री गिल्स चुयेन तथा श्री अशोक मिश्रा आमंत्रित किए गए।

रानावि द्वितीय वर्ष के छात्रों की गतिविधियाँ :

- इस समयावधि में द्वितीय वर्षों के छात्रों को श्री अब्दुल लतीफ खटाना और डॉ. दानिश इकबाल के नाटक निर्देशन में छात्रों को दो समूहों में शेक्सपीयर प्रोडक्शन पर प्रशिक्षित किए।
- गोवा, पंजिम में 55वें IFFI गोवा अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में द्वितीय वर्ष के छात्रों को 18 से 30 नवंबर, 2024 तक भाग लेने के लिए शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।

रानावि प्रथम वर्ष के छात्रों की गतिविधियाँ :

- प्रथम वर्ष के छात्र 15 जुलाई, 2024 को स्कूल में शामिल हुए। उनका दीक्षारम्भ 22 जुलाई, 2024 को प्रारम्भ हुआ।
- दीक्षारम्भ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. नीरजा गुप्ता; कुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय आमंत्रित थीं। रानावि सोसाइटी के उपाध्यक्ष प्रो. भरत गुप्त, सोसाइटी सदस्य श्री अवतार साहनी के साथ सभी संकाय सदस्य उपस्थित थे। निदेशक श्री चित्तरंजन त्रिपाठी द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया।
- प्रथम वर्ष के छात्रों को पोलिश नर्तक आर्टुर प्रिबिल्स्की द्वारा नृत्य कार्यशाला, प्रो.रॉबिन दास के मार्गदर्शन में अभिनय प्रदर्शन, अनिल मिश्रा के मार्गदर्शन में संगीत शिक्षण, गायत्री देखा के मार्गदर्शन में गति संचालन, सुश्री रीता कोठारी के मार्गदर्शन में रसास्वादन कार्यशाला, सुश्री शर्मिष्ठा समल द्वारा योग, सुश्री लाएशराम बीना देवी द्वारा गति संचालन, श्री शांतनु बोस द्वारा विश्व नाटक, श्री विवेक इमानेमी द्वारा शास्त्रीय भारतीय नाटक, श्री विपिन भारद्वाज द्वारा हिंदी बोल-चाल, सुश्री श्रुति द्वारा अंग्रेज़ी बोल-चाल, श्री अमजीत शर्मा द्वारा मंच परिकल्पना, श्री पराग शर्मा द्वारा रंगमंच प्रबंधन, श्री आसिफ़ अली हैदर ख़ान द्वारा भारतीय शास्त्रीय निर्देशन सिद्धान्त, सुश्री हेमा सिंह द्वारा वाक एवं संभाषण, श्री अमित बनर्जी द्वारा वाक एवं संभाषण, श्री दीपांकर पॉल द्वारा मंच प्रकाश परिकल्पना, श्री एन. जी. रोशन द्वारा रूपसज्जा की कक्षाएँ ली गई।
- डॉ. मानवप्रीत कौर कुतुबमीनार, दिल्ली (08 दिसंबर) तथा लाल किला एवं हुँमायूँ का मकबरा, दिल्ली (15 दिसंबर, 2024) का दौरा किया गया।
- प्रथम वर्ष के छात्रों की मौखिक परीक्षा 20 दिसंबर, 2024 को आयोजित की गई।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ

17 वें एशिया पैसिफिक बॉण्ड ऑफ़ थिएटर स्कूल्स फ़ेस्टिवल

- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली द्वारा 17वें एशिया पैसिफिक बॉन्ड ऑफ थिएटर स्कूल्स फेस्टिवल और डायरेक्टर्स मीट का उद्घाटन अभिमंच सभागार में 14 अगस्त, 2024 को किया गया। इस अवसर पर -

  » प्रोफेसर हुआंग चांगयोंग (एशिया पैसिफिक बॉन्ड के अध्यक्ष और शंघाई थिएटर अकादमी, चीन अध्यक्ष) मुख्य अतिथि
  » प्रोफेसर लियोन डेविड रुबिन (एपीबी कार्यकारी बोर्ड के उपाध्यक्ष तथा लासेल कॉलेज ऑफ आर्ट्स, सिंगापुर के डीन)
  » प्रोफेसर किम मी ही (पैसेफिक बॉन्ड कार्यकारी बोर्ड के उपाध्यक्ष, कोरिया नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट्स, दक्षिण कोरिया के डीन)
  » श्री परेश रावल (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सोसाइटी के अध्यक्ष) वर्चुअल रूप से
  » प्रोफेसर भरत गुप्त (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सोसाइटी के उपाध्यक्ष)
  » श्री चित्तरंजन त्रिपाठी (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक)
  » श्री प्रदीप के मोहंती (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रजिस्ट्रार) ने संबोधन दिया।
  » श्री शांतनु बोस (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के डीन) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिए।

- चीन के जू जिलाई ने चीनी ओपेरा अभिनय पर एक दिवसीय कार्यशाला लिया, जिसमें हाथ के हाव-भाव, आँखों की हरकतें, शरीर की भाषा, पैरों की चाल पर केंद्रित प्रशिक्षण दिया गया।

विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन :

- **रानावि परिसर में**

  » ड्रामेटिक्स में बेसिक तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स
  » अभिनय में एडवांस तीन महीने का कोर्स तथा
  » वीकेंड एक्टिंग कोर्स की शुरुआत की गई।

  इस प्रशिक्षण के अंत में छात्रों ने :

  » **मिशन इंपॉसिबल;** *सुश्री निहारिका सिंह के निर्देशन में (02 दिसंबर, 2024)*
  » **यहूदी की लड़की**; *सुश्री प्रियंका शक्ति ठाकुर के निर्देशन में (03 दिसंबर, 2024)*
  » **चैनपुर की दास्तान**; *श्री रामजी बाली के निर्देशन में (02 दिसंबर, 2024)*
  » **हंसिनी**; *श्री उत्पल झा के निर्देशन में (02 दिसंबर, 2024)*
  » **गूंज और छाया**; *श्री शांतनू बोस के निर्देशन में (03 दिसंबर, 2024)*
  » **सिंपल सिटी**; *सुश्री वंदना वशिष्ठ के निर्देशन में (03 दिसंबर, 2024) को मंचित किया गया।*

- **शिक्षक दिवस समारोह** का आयोजन – 05 सितम्बर, 2024.

प्रस्तुति विभाग

निर्धारित समयावधि में रानावि प्रस्तुति विभाग की गतिविधियों का विवरण:

छात्र वर्ष	नाटक का नाम	निर्देशक का नाम	स्थान	दिनांक
तृतीय वर्ष	द सीगल	बाहारूल इस्लाम	अभिमंच सभागार, रा.ना.वि. परिसर	6,7,8, एवं 9 जुलाई, 2024
तृतीय वर्ष	थ्री सिस्टर्स	मीता वशिष्ट	अभिमंच सभागार, रा.ना.वि. परिसर	17,18,19,20 जुलाई 2024
तृतीय वर्ष	हिप हॉप	राजेश कुमार	अभिमंच सभागार, रा.ना.वि. परिसर	21 सितंबर, 2024
तृतीय वर्ष	लेमन सोडा	नीलम मानसिंह चौधरी	बहुमुख सभागार, रा.ना.वि. परिसर	27,28,29 सितंबर, 2024
तृतीय वर्ष	कोरियोग्राफी	गिल्स चुयेन	रानावि परिसर	19 नवंबर, 2024
तृतीय वर्ष	द गुड पर्सन ऑफ सेचवान	सर्गेई चेरकास्की	बहुमुख सभागार, रानावि परिसर	6, 7, 8 एवं 9 दिसंबर, 2024
तृतीय वर्ष	नतालिया श्रुगानोवा	थ्री पेनी ओपेरा	रानावि परिसर	1,2,3 एवं 4 दिसंबर, 2024
तृतीय वर्ष	सर्गेई चेरकास्की	गुड पर्सन ऑफ सेचवान	रानावि परिसर	6,7,8 एवं 9 दिसंबर, 2024
द्वितीय वर्ष	हैमलेट	दानिश इक़बाल	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	3, 4, 5 एवं 6 अक्तूबर, 2024
द्वितीय वर्ष	रोमियो जूलियट	अब्दुल लतीफ खटाना	बहुमुख सभागार, रानावि परिसर	9, 10 एवं 11 अक्तूबर, 2024
प्रथम वर्ष	कुडियाट्टम	श्री मार्गी मधु	अभिमंच सभागार, रा.ना.वि. परिसर	3 और 4 जुलाई, 2024
प्रथम वर्ष	राम विजय	डॉ. भवानन्द बरबायन	अभिमंच सभागार, रा.ना.वि. परिसर	10, 12, और 13 अगस्त 2024
प्रथम वर्ष	मधु ए. के.	कुटियाट्टम	रानावि परिसर	20 दिसंबर, 2024
प्रथम वर्ष (ग्रुप-ए)	ग्रीक दृश्यबंध	दानिश इकबाल	रानावि परिसर	28 अक्तूबर, 2024
प्रथम वर्ष (ग्रुप-बी)	ग्रीक दृश्यबंध	आसिफ़ अली हैदर ख़ान	रानावि परिसर	29 अक्तूबर, 2024

रंगमंडल

वर्तमान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडल के कलाकारों द्वारा 09 नाटकों का मंचन किया जा रहा है। इन छ: महीनों में कुल 34 प्रस्तुतियाँ देश भर में आयोजित हुई। नाटकों का विवरण निम्न है :

1. ताजमहल का टेण्डर
- लेखक : अजय शुक्ला
- निर्देशक : चित्तरंजन त्रिपाठी

2. **बायेन**
- कथाकार : महाश्वेता देवी
- निर्देशक : उषा गांगुली

3. अंधायुग
- लेखक : धर्मवीर भारती
- निर्देशक : राम गोपाल बजाज

4. माई री मैं का से कहूँ
- लेखक : विजय दान देथा
- निर्देशक : अजय कुमार

5. लैला मजनूँ
- लेखक : इस्माईल चुनारा
- निर्देशक : राम गोपाल बजाज

6. बाबूजी
- लेखक : विभांशु वैभव
- निर्देशक : राजेश सिंह

7. समुद्र मंथन
- लेखक : आसिफ अली हैदर खान
- निर्देशक : चित्तरंजन त्रिपाठी

8. **अभिज्ञान शाकुन्तलम्**
- लेखक : महाकवि कालिदास
- निर्देशक : विदुषी ऋता गांगुली

9. बंद गली का आख़िरी मकान
- लेखक : धर्मवीर भारती
- निर्देशक : देवेंद्र राज अंकुर

जुलाई, 2024 (कुल 02 प्रस्तुतियाँ)

नाटक का नाम	प्रेक्षागृह	दिनांक
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	26 और 28 जुलाई 2024
बंद गली का आख़िरी मकान	एयर फ़ोर्स ऑडिटोरियम	27 जुलाई 2024

अगस्त, 2024 (कुल 05 प्रस्तुतियाँ)

नाटक का नाम	प्रेक्षागृह	दिनांक
ताजमहल का टेंडर	लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक अकादमी प्रेक्षागृह, मसूरी (उत्तराखण्ड)	02 अगस्त, 2024
समुद्र मंथन	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	23, 24, 25 एवं 26 अगस्त, 2024
बायेन	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	27 अगस्त, 2024
बंद गली का आखिरी मकान	सम्मुख सभागार, रानावि परिसर	28 एवं 29 अगस्त, 2024
लैला मजनूं	सम्मुख सभागार, रानावि परिसर	30 एवं 31 अगस्त, 2024

सितंबर, 2024 (कुल 10 प्रस्तुतियाँ)

नाटक का नाम	प्रेक्षागृह	दिनांक
बाबूजी	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	01 एवं 02 सितंबर, 2024
माई री मैं का से कहूँ	सम्मुख सभागार, रानावि परिसर	03 एवं 04 सितंबर, 2024
अन्धा युग	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	05 सितंबर, 2024
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	06, 07 एवं 08 सितंबर, 2024
ताजमहल का टेंडर	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	09 सितंबर, 2024
ताजमहल का टेंडर	इंडियन इंस्ट्टियूट ऑफ टूरिज्म ऐण्ड ट्रेवल मैनेजमैंट, ग्वालियर	12 सितंबर, 2024
अन्धा युग	इंडियन इंस्ट्टियूट ऑफ टूरिज्म ऐण्ड ट्रेवल मैनेजमैंट, ग्वालियर	13 सितंबर, 2024
बायेन	इंडियन इंस्ट्टियूट ऑफ टूरिज्म ऐण्ड ट्रेवल मैनेजमैंट, ग्वालियर	14 सितंबर, 2024
माई री मैं का से कहूँ	इंडियन इंस्ट्टियूट ऑफ टूरिज्म ऐण्ड ट्रेवल मैनेजमैंट, ग्वालियर	15 सितंबर, 2024
बाबूजी	इंडियन इंस्ट्टियूट ऑफ टूरिज्म ऐण्ड ट्रेवल मैनेजमैंट, ग्वालियर	16 सितंबर, 2024

अक्तूबर, 2024 (मात्र 01 प्रस्तुति)

नाटक का नाम	प्रेक्षागृह	दिनांक
माई री मैं का से कहूँ	देहरादून (उत्तराखंड)	25, 26 एवं 27 अक्तूबर, 2024

नवंबर, 2024 (कुल 14 प्रस्तुतियाँ)

नाटक का नाम	प्रेक्षागृह	दिनांक
ताजमहल का टेंडर	गेयटी थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	04 नवंबर, 2024
अंधा युग	गेयटी थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	05 नवंबर, 2024
बायेन	गति थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	06 नवंबर, 2024
बन्द गली का आखिरी मकान	गति थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	07 नवंबर, 2024
लैला मजनूं	गेयटी थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	08 नवंबर, 2024
माई री मैं का से कहूँ	गेयटी थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	09 नवंबर, 2024
बाबूजी	गेयटी थिएटर, मल्टी प्रपोज हॉल, दि राइड, शिमला, हि.प्र.	10 नवंबर, 2024
माई री मैं का से कहूँ	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सभागार, पी आई ई टी कॉलेज, समालखा, पानीपत हरियाणा	13 नवंबर, 2024
बाबूजी	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सभागार, पी आई ई टी कॉलेज, समालखा, पानीपत हरियाणा	14 नवंबर, 2024
लैला मजनूं	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सभागार, पी आई ई टी कॉलेज, समालखा, पानीपत, हरियाणा	15 नवंबर, 2024
बन्द गली का आखिरी मकान	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सभागार, पी आई ई टी कॉलेज, समालखा, पानीपत हरियाणा	16 नवंबर, 2024
ताजमहल का टेंडर	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सभागार, पी आई ई टी कॉलेज, समालखा, पानीपत हरियाणा	17 नवंबर, 2024
माई री मैं का से कहूँ	आई. जी. पार्क, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश	25 नवंबर, 2024
बाबूजी	आई. जी. पार्क, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश	26 नवंबर, 2024

दिसंबर, 2024 (कुल 02 प्रस्तुतियाँ)

नाटक का नाम	प्रेक्षागृह	दिनांक
ताजमहल का टेंडर	राजस्थान इंटरनैशनल सेंटर, जयपुर	13, 14, 15, 16 एवं 17 दिसंबर, 2024
बन्द गली का आख़िरी मकान	अभिमंच सभागार, रानावि परिसर	25 दिसंबर, 2024

<u>रंगमंडल की अन्य गतिविधियाँ:</u>

रंग षष्ठि: (हीरक जयंती समारोह):

- रंगमंडल 60वीं वर्षगांठ रंग षष्ठि: (हीरक जयंती समारोह) :

  » रंगमंडल रानावि परिसर एवं पूरे विद्यालय में रंगमंडल द्वारा पिछले 60 वर्षों में किए गए नाटकों की प्रदर्शनी लगाई गई। समारोह दिनांक 23 अगस्त से 09 सितम्बर, 2024 तक विद्यालय के सम्मुख एवं अभिमंच सभागार में नाट्य प्रस्तुति आयोजित की गई।

समारोह के अंतर्गत प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को सेमिनार का भी आयोजन किया गया। रंगमंडल द्वारा अब तक किए गए कार्यों के परिप्रेक्ष्य में जो भी निर्देशक, डिजाइनर, अभिनेता, म्यूजिक निर्देशक ने अपना योगदान दिया है, उनमें से विशिष्ट व्यक्तियों को इस सेमिनार हेतु अलग-अलग दिनों में अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में चर्चा हेतु आमंत्रित किया गया।

- **रंगमंडल रंग षष्ठि: - सेमिनार**

  » **24 अगस्त, 2024 (प्रथम सत्र) : रंगमंडल की परिकल्पना, स्वरूप एवं भारतीय रंगमंच में योगदान**
  मुख्य अतिथि - प्रो. रामगोपाल बजाज
  वक्ता – प्रो. कीर्ति जैन, प्रो. देवेंद्र राज अंकुर, प्रो. वामन केन्द्रे, प्रो. सुरेश शर्मा एवं श्री ज्योतिष जोशी

  » **24 अगस्त, 2024 (दूसरा सत्र) : रंगमंडल की परिकल्पना, स्वरूप एवं भारतीय रंगमंच में योगदानः अभिनेता की दृष्टि में**
  मुख्य अतिथि – सुश्री नादिरा ज़हीर बब्बर
  श्री अनंग देसाई, श्री राजेन्द्र गुप्ता, श्री जाकिर हुसैन, सुश्री हिमानी शिवपुरी और श्री सौरभ शुक्ला

  » **25 अगस्त, 2024 : रंगमंडल की परिकल्पना, स्वरूप एवं भारतीय रंगमंच में योगदानः निर्देशक की दृष्टि में**
  मुख्य अतिथि – प्रो. रामगोपाल बजाज
  प्रो. अनुराधा कपूर, प्रो. रॉबिन दास, प्रो. नीलम मानसिंह चौधरी, श्री स्वानंद किरकिरे और श्री चित्तरंजन त्रिपाठी

  » **31 अगस्त, 2024 : रंगमंडल की परिकल्पना, स्वरूप एवं भारतीय रंगमंच में योगदानः अभिनेता की दृष्टि में**
  मुख्य अतिथि – सुश्री हेमा सिंह
  श्री चित्तरंजन त्रिपाठी, सुश्री हरविंदर कौर, श्री श्रीवर्धन त्रिवेदी, श्री समीप सिंह और श्री टीकम जोशी

  » **01 सितम्बर, 2024 : रंगमंडल की परिकल्पना, स्वरूप एवं भारतीय रंगमंच में योगदानः परिकल्पक की दृष्टि में**
  मुख्य अतिथि – सुश्री डॉली आहलूवालिया
  श्री बापी बॉस, प्रो. सत्यव्रत राउत, सुश्री कीर्ति वी. शर्मा और श्री राजेश सिंह

  » **07 सितम्बर, 2024 : रंगमंडल की परिकल्पना, स्वरूप एवं भारतीय रंगमंच में योगदानः संगीत परिकल्पक की दृष्टि में**
  मुख्य अतिथि – श्री चित्तरंजन त्रिपाठी
  श्री काजल घोष, सुश्री अंजना पुरी, श्री लोकेन्द्र त्रिवेदी, श्री पियूष मिश्रा और श्री अजय कुमार

  » **14 सितंबर, 2024 से रंगमंडल के नए सत्र का आरम्भ हुआ।**

संस्कार रंग टोली

संस्कार रंग टोली (थिएटर इन एजुकेशन कंपनी) की स्थापना 16 अक्तूबर, 1989 को की गई। वर्तमान में यह देश में रंगमंच शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है।

महत्वपूर्ण आयोजन :

- **संस्कार रंग टोली (टी.आई.ई. कंपनी) द्वारा होप अकादमी, जिला - चुमुकेदिमा, नागालैंड में होप अकादमी कैंपस हॉल में 09 दिसंबर, 2024 को कार्यशाला आयोजित की गई।**

  » **छाया कठपुतली;** रिकेन न्गोमले के सहयोग से आरती वी. एवं श्री अंकित रवानी; 07 से 10 अगस्त, 2024
  » **शिक्षा में नाटक**; श्री मुकेश छाबड़ा; 05 से 11 अगस्त, 2024
  » **ऑब्जेक्ट थिएटर कार्यशाला**; रिकेन ङमले के मार्गदर्शन में सुश्री चेइती घोष के नेतृत्व में; 09 से 12 सितंबर 2024

- **नाट्य प्रस्तुतियाँ:**

  » **वो कागज़ की कश्ती... वो बारिश का पानी...;** निर्देशक: सुन्दर लाल छाबड़ा;
  स्थान: सम्मुख सभागार, रानावि; 04 से 07 अक्तूबर, 2024
  स्थान: पुस्तक मेला एवं संस्कृति महोत्सव, पंचकुला; 06 नवंबर, 2024
  स्थान: डॉन बॉस्को स्कूल, जोलांग, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश; 7 दिसंबर, 2024

  » **टीची टीटा टोटो टुरु**; निर्देशक: जयंत राभा
  स्थान : चुमुकेदिमा जिले के होप अकादमी, नागालैंड; 09 दिसंबर, 2024

  » **तानी ला तान्यो**; निर्देशक: रिकेन ङमले;
  स्थान: इटानगर, दीमापुर, नागालैंड;11 दिसंबर, 2024

- **संडे क्लब की काक्षाओं का संचालन**

  » संस्कार रंग टोली की आगामी वार्षिक गतिविधि के साथ संडे क्लब पार्ट– I, II एवं III के लिए पहले आओ पहले पाओ के आधार पर ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए - दिनांक 15 से 21 अगस्त, 2024. दिनांक 26 अगस्त, 2024 को विद्यालय की वेबसाइट पर चयनित सूची प्रकाशित की गई। प्रवेश प्रक्रिया व कक्षों का संचालन कार्य 31 अगस्त से 01 सितंबर, 2024 को किया गया।

  » संडे क्लब के तहत संडे क्लब पार्ट – I (06 ग्रुप); संडे क्लब पार्ट – II (03 ग्रुप) एवं संडे क्लब पार्ट – III मे (01 ग्रुप) संचालित किया गया, जिसकी कक्षाओं का संचालन प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को किया गया।

- **'ड्रामा इन एजुकेशन' विषय पर 07 दिवसीय कार्यशाला के आयोजन हेतु ऑनलाइन आवेदन तिथि – 25 से 31 जुलाई, 2024.**
- **बाहरी प्रतिभागियों द्वारा 'ड्रामा इन एजुकेशन' विषय केंद्रित कार्यशाला का आयोजन – 05 से 11 अगस्त, 2024.**
- **बाहरी विशेषज्ञों द्वारा टोली के कलाकारों के साथ पपेट्स कार्यशाला / कक्षाओं का संचालन – 09 से 12 अगस्त, 2024.**

प्रशासनिक विभाग

नव नियुक्तियाँ :

- श्री रामवीर गुर्जर ने 01 अक्तूबर, 2024 को सहायक रजिस्ट्रार पद पर अपना कार्यभार संभाला।
- श्री पीयूष श्रीवास्तव ने 04 अक्तूबर, 2024 को सहायक फोटोग्राफर के पद पर अपना कार्यभार ग्रहण किया।
- श्री अभिषेक ने 13 नवंबर, 2024 को स्टैज मनैजर के पद पर अपना कार्यभार ग्रहण किया।
- श्री अंशुल प्रताप सिंह ने 18 नवंबर, 2024 को पर्क्युशनिस्ट ग्रेड-II पद पर अपना कार्यभार ग्रहण किया।
- श्री मनोज कुमार दास ने 02 दिसंबर, 2024 को पर्क्युशनिस्ट ग्रेड-III पद पर अपना कार्यभार ग्रहण किया।

सेवानिवृत्त :

- श्री रामप्रताप; काष्ठशाला प्रशिक्षक पद से सेवानिवृत्त – 31 अगस्त, 2024.
- श्री पृथ्वी सिंह नेगी; केयरटेकर पद से सेवानिवृत्त – 30 सितंबर, 2024.
- श्री ओम प्रकाश सागर, उप-कुलसचिव पद से सेवानिवृत्त – 31 दिसंबर, 2024.

सोसाइटी की बैठक :

- रा.ना.वि. 170 वीं सोसाइटी की बैठक – 09 सितम्बर, 2024.
- बजटीय मद के संबंध में अनुभागीय प्रमुखों की बैठक – 21 अक्टूबर, 2024 .

विविध क्रिया-कलाप:

- भारत सरकार के 'हर घर तिरंगा आंदोलन 'हर घर तिरंगा, हर मन तिरंगा' के अवसर पर, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्रों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, कलाकारों और अन्य कर्मचारियों ने दोपहर 1:30 बजे रा.ना.वि. से शुरू होकर श्री राम सेंटर, त्रिवेणी कला संगम, एलटीजी, रवींद्र भवन से होते हुए रा.ना.वि. तक तिरंगा यात्रा का 14 अगस्त 2024 को आयोजन किया।
- 78 वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय प्रांगण में निदेशक श्री चित्तरंजन त्रिपाठी द्वारा ध्वजारोहण 15 अगस्त, 2024 को किया गया। इस सुअवसर पर रा.ना.वि. के कुलसचिव महोदय श्री प्रदीप कुमार मोहंती, अन्य स्टाफ़ सदस्य एवं छात्रगण भी उपस्थित थे।
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय वर्ष 2024-25 के लिए 'नाट्यशास्त्र' में तीन महीने के सर्टिफिकेट कोर्स (अंशकालिक, गैर-आवासीय) के लिए 16 अगस्त 2024 आवेदन आमंत्रित किया।
- दिनांक 17 सितंबर से 02 अक्टूबर, 2024 तक स्वच्छता अभियान के अंतर्गत दिनांक 27 सितंबर, 2024 को स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शपथ ग्रहण के उपरांत नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन किया गया।

राजभाषा विभाग

- ‘राजभाषा कार्यान्वयन समिति’ की तिमाही बैठक का आयोजन कुलसचिव महोदय की अध्यक्षता में – 27 जुलाई, 2024.
- ‘तकनीकी विकास : हिन्दी ई-टूल्स के साथ’ विषय पर विशेषज्ञ सुश्री सुनंदा वर्मा की उपस्थिति में अतंर्मुख सभागार में कार्यशाला – 01 अगस्त, 2024.
- सम्मुख सभागार में हिन्दी दिवस के उपलक्ष में हिन्दी उत्सव का उद्घाटन 18 सितंबर 2024 किया गया। भाषा वैज्ञानिक डॉ. विमलेश कांति वर्मा और कवियत्री डॉ. रमा सिंह विशिष्ट मुख्य अथिति उपस्थित थे।
- ‘चित्र अभिव्यक्ति’ प्रतियोगिता – 20 सितंबर, 2024
- ‘राजभाषा प्रश्नोत्तरी एवं सामान्य ज्ञान’ प्रतियोगिता – 23 सितंबर, 2024
- ‘पहेली प्रतियोगिता’ – 24 सितंबर, 2024
- ‘सुलेख एवं श्रुतलेख’ प्रतियोगिता – 25 सितंबर, 2024
- ‘टिप्पण – प्रारूपण’ विषय पर कार्यशाला – 26 सितंबर, 2024
- ‘टिप्पण एवं प्रारूपण’ प्रतियोगिता – 27 सितंबर, 2024
- हिन्दी उत्सव के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरण लेखिका डॉ. कायनात काज़ी मुख्य अतिथि की उपस्थिति में – 25 अक्तूबर, 2024.
- विभाग द्वारा ‘कहानी लेखन’ विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला डॉ. कायनत क़ाजी के निर्देशन में।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक श्री प्रदीप कुमार मोहन्ती, कुलसचिव की अध्यक्षता में – 27 नवंबर, 2024

प्रकाशन विभाग

रंग अम्लान – बाल रंग कार्यशाला ब्रोश्यर – 10 जुलाई, 2024.
अभिरंग – 3 एवं 4 (संयुक्तांक, अक्तूबर, 2023 से मार्च, 2024) – 16 जुलाई 2024.
रंग प्रसंग (अंक – 56) – 10 अक्तूबर, 2024.
लमाण – मूल : श्रीराम लागू; अनुवाद : श्रीमती प्रतिमा डीके – 12 अक्तूबर, 2024.
अभिरंग (अंक 05; अप्रैल-जून, 2024) – 07 नवंबर, 2024.

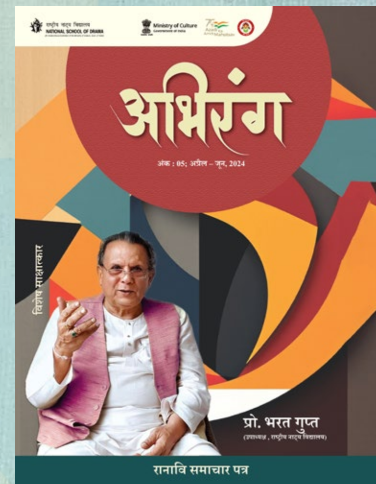

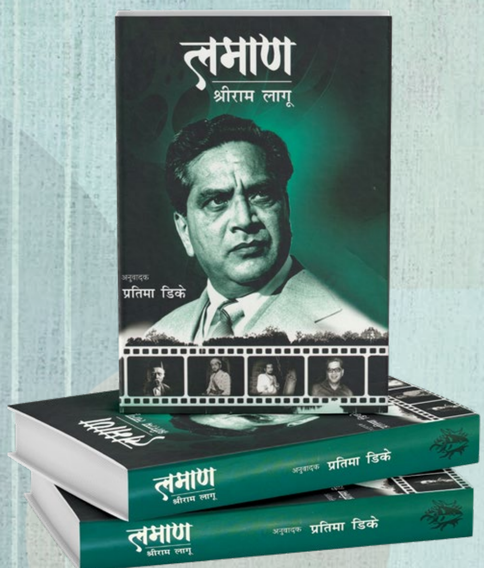

बुकशॉप

जुलाई से दिसम्बर, 2024 समयावधि में रानावि बुकशॉप के माध्यम से कुल 3,177 पुस्तकों की बिक्री हुई, जिसमें 85 पुस्तकें ऑनलाईन माध्यम से बिकी हैं। इस दौरान पुस्तकों की बिक्री से लगभग ₹05, 51, 536 /- बुकाशॉप को प्राप्त हुआ है। साथ ही इस समयावधि में लगभग ₹05,71,375 /- राशि की पुस्तकें गणमान्य व्यक्तियों को उपहार स्वरूप प्रदान किया गया। इस प्रकार जुलाई – दिसम्बर, 2024 के मध्य कुल ₹11, 22,911/- रुपये बुकशॉप के माध्यम से रानावि को प्राप्त हुआ है।

समयावधि	बुकशॉप से पुस्तकों की बिक्री	ऑनलाईन माध्यम से पुस्तकों की बिक्री
जुलाई, 2024	439	09
अगस्त, 2024	445	12
सितम्बर, 2024	583	11
अक्टूबर, 2024	487	17
नवम्बर, 2024	481	20
दिसम्बर, 2024	657	16

किताब उपलब्ध हैं
amazon.com

विस्तार कार्यक्रम एवं बाल नाट्य विभाग

निर्धारित समयावधि में विस्तार कार्यक्रम के तहत देश भर में सात कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, चण्डीगढ़ और पंजाब को शामिल किया गया। रानावि द्वारा इस बीच देश भर में कुल 143 दिन कार्यशाला का संचालन हुआ। विवरण निम्न है –

- **30 दिवसीय नाट्य प्रस्तुति परक कार्यशाला** – अभिनाट नाट्य संस्था, जयपुर के सहयोग से जयपुर (राजस्थान) में – 20 नवंबर से 20 दिसंबर, 2024.
- **07 दिवसीय कार्यशाला** – एन.टी.पी.सी., लि. के प्रशिक्षु कर्मचारियों को रंगमंच कला एवं व्यक्तित्व विकास केंद्रित कार्यशाला – 21 से 27 नवंबर, 2024.
- **30 दिवसीय नाट्य प्रस्तुति परक कार्यशाला** – रंगसरोकार नाट्य समिति, नरसिंगपुर के सहयोग से (मध्य प्रदेश) में – 24 नवंबर से 24 दिसंबर, 2024.
- **30 दिवसीय नाट्य प्रस्तुति परक कार्यशाला** – पूर्वाभ्यास नाट्य संस्थान, मुम्बई के सहयोग से मुम्बई (महाराष्ट्र) में – 09 दिसम्बर से 11 जनवरी, 2025.
- **07 दिवसीय कार्यशाला** – एन.टी.पी.सी., लि. के प्रशिक्षु कर्मचारियों को रंगमंच कला एवं व्यक्तित्व विकास केंद्रित कार्यशाला – 18 से 24 दिसम्बर, 2024.
- **09 दिवसीय कार्यशाला** – चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से सूचना एवं तकनीकी अभिकल्पन विषय पर चंडीगढ़ में कार्यशाला – 24 दिसंबर, 2024 से 01 जनवरी, 2025.
- **30 दिवसीय नाट्य प्रस्तुति परक कार्यशाला** – मंच रंगमंच, अमृतसर के सहयोग अमृतसर (पंजाब) में – 15 दिसंबर, 2024 से 15 जनवरी, 2025.

रानावि केन्द्र

रानावि
बेंगलुरु केंद्र (कर्नाटक)

- बैंगलुरू (कर्नाटक) केन्द्र के छात्रों को जुलाई से दिसम्बर, 2024 के मध्य नाटक जस्मा ओडन, कन्नड़ कनमनीगालु, 'सिकल सेल एनीमिया' रोग पर नुक्कड़ नाटक, चेख़व और इब्सन के दृश्यबंध, ग्रीक रंगमंच एवं पाठय पुस्तक का मूल्यांकन, कथा गायन, माइम और शारीरक गति संचालन के दृश्यबंध, भौतिक एवं महाकाव्यात्मक रंगमंच, समकालीन गति संचालन, प्रकृतिवादी नाटक, तमिलनाडु एवं आन्ध्र प्रदेश के लोक नाट्य रूप आदि विषय पर केंद्रित प्रशिक्षण दिए गए।

- इस निर्धारित समयावधि में देश के जाने-माने रंग प्रशिक्षक डॉ. बी जयश्री, वीणा शर्मा, प्रवीण कुमार, चिदंबर राव जाम्बे, नटराज हुलियार, सुशील शर्मा, वॉल्टर डिसूज़ा, एस. रघुनंदन, सुरेन्द्र, सुरेन्द्रनाथ, प्रो. आर. राजू आदि केन्द्र के छात्रों को प्रशिक्षिण दिए।

रानावि
गंगटोक केंद्र (सिक्किम)

- गंगटोक (सिक्किम) केन्द्र के छात्रों को जुलाई से दिसम्बर, 2024 के मध्य गति संचालन, रंगमंच संगीत, स्क्रिप्ट एनालिसिस, रूपसज्जा, सूरजमुखी एंव हैमलेट, सफेद लकीर एवं शंकर, त्रिलोचन पोखरेल, सिक्किम में छोरा को कथा, पारंपरिक प्रस्तुति उन्मुख, भक्षक, एरियल मूभमेंट, अभिनय, प्रोपटी मेकिंग, सौंदर्यशास्त्र, थांगटा, प्रकाश परिकल्पना आदि विषय पर केंद्रित प्रशिक्षण दिए गए।

- इस निर्धारित समयावधि में देश के जाने-माने रंग प्रशिक्षक ल्हकपा लेपचा, काजल घोष, जोया मोहन कुलश्रेष्ठ, डॉ. संजॉय सामंता, स्क्रिप्ट रीडिंग, कुमारी गौतम, श्रद्धा छेत्री, पश्चिम बंगाल का मार्शल आर्ट फॉर्म, कल्लोल भट्टाचार्य, देव कुमार पॉल, अनुरद्ध खुटवर्ड, अरुण कुमार मलिक, मानवप्रीत अरोड़ा, अब्दुल लतीफ खटाना, गुरु एस. विश्वजीत, साउती चक्रवर्ती आदि केन्द्र के छात्रों को प्रशिक्षिण दिए।

- **अन्य गतिविधियाँ :**
  - » 'नवोदय' नाटक मंचन – 12 अगस्त 2024.
  - » साउती चक्रवर्ती, अरुण कुमार मलिक, नवदीप कौर एवं अवतार साहनी के नेतृत्व में वायवा – 04 नवंबर, 2024.
  - » अध्ययन भ्रमण के अंतर्गत सिक्किम भ्रमण – 05 एवं 06 नवंबर, 2024.

रानावि
श्रीनगर केंद्र (जम्मू एवं कश्मीर)

- "तिरंगे की कहानी कश्मीर की जुबानी" नामक एक उल्लेखनीय नुक्कड़ नाटक; जुनैद राथर द्वारा निर्देशित राजा कला और सांस्कृतिक फाउंडेशन, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर के सहयोग से श्रीनगर सेंटर लाल चौक, अमर सिंह कॉलेज गोगी बाग श्रीनगर और सैयद बाजार, ब्रेननिशात श्रीनगर में किया गया – 10 से 12 अगस्त, 2024.

- नाटक 'कथ...आजादी हिंज' अरुण कुमार मलिक के निर्देशन में निशांत झेलम घाट, श्रीनगर में मंचित किया गया – 14 अगस्त, 2024.

- श्रीनगर जम्मू एवं कश्मीर केन्द्र द्वारा 15 अगस्त 2024 को 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा।

रानावि
अगरतला केंद्र (त्रिपुरा)

- अगरतल्ला (त्रिपुरा) केन्द्र के छात्रों को जुलाई से दिसम्बर, 2024 के मध्य ड्रामा-इन- एजूकेशन, माइम, प्रॉपर्टी मेकिंग और मेक-अप, माटी अखाड़ा, आवाज, भाषण, जादू, विश्व रंगमंच इतिहास, वाक एवं संभाषण, गति संचालन, प्रकाश परिकल्पना, कठपुतली कला, पश्चिमी नृत्य, स्क्रिप्ट लेखन, फोरम थिएटर और थिएटर ऑफ़ दि ऑप्रेस्ड, कलाबाजी, एप्लाइड थिएटर और पाठ्यक्रम में नाटक, किशोरावस्था के मुद्दे और बाल विकास आदि विषय केंद्रित प्रशिक्षण दिए गए।

- इस निर्धारित समयावधि में देश के जाने-माने रंग प्रशिक्षक अतार साहनी, अरुण कुमार मलिक, लालू राहंग, एलॉय देब बर्मा, जयंत डे, डॉ. शांतनु भट्टाचार्य, गौरव कुमार हजारिका, डॉ. जादब बोरा, दीपेंद्र रावत, देब कुमार पॉल, प्रभितांग्शु दास, बिजॉय कृष्ण आचार्जी, बिप्लब बोरकाकोती, मल्लिका प्रसाद, मुन मुन सिंह, विक्रम मोहन तथा हिमांशु बी. जोशी आदि ने केन्द्र के छात्रों को प्रशिक्षिण दिए।

- हर घर तिरंगा का आयोजन ललित कला अकादेमी एवं संगीत नाटक अकादेमी उत्तर पूर्व प्रलेखन केन्द्र के सहयोग से आयोजित – 01 से 05 सितम्बर, 2024

- त्रिपुरा केन्द्र ने 11वें बैच के छात्रों का विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों की उपस्थिति में 27 सितंबर 2024 को मिड टर्म वाइवा वॉइस परीक्षा में विशेषज्ञ थे – श्रीचित्तरंजन त्रिपाठी (निदेशक, रा.ना.वि., दिल्ली), श्री अरुण कुमार मलिक (रानावि केन्द्र प्रभारी), श्री बिप्लब बोरकाकोटी (रनावि त्रिपुरा, केन्द्र निदेशक), श्री प्रभितंगसु दास (प्रख्यात कठपुतली कलाकार) एवं सुश्री मल्लिका प्रसाद (अतिथि संकाय)।

- ‘स्वच्छता ही सेवा’ कार्यक्रम– 01 से 02 अक्तूबर, 2024

- ग्रिफ्स नाट्य प्रस्तुति : शैक्षिक सत्र 2023-24 विप्लव बोराकाकोति के निर्देशन में एक वर्षीय नाट्य प्रस्तुति ‘तितर-बितर’ का अगरतला, टाउन हॉल में (1.) महारानी तुलसीबती गर्ल्स हाई स्कूल (2) हेनरी डेरोजीयो अकादमी हाई स्कूल (3) खुदी राम बसु इंग्लिश मिडियम स्कूल (4) रामाकृष्ण विवेकानन्द विद्या मंदिर (5) उमाकांत अकादमी इंग्लिश मीडियम स्कूल (6) डॉ. बी. आर. अंबेडकर मॉडल स्कूल के छात्रों के लिए किया गया।

- शैक्षिक भ्रमण पाठ्यक्रम : दो चयनित स्थलों का कथलिया, सोनामुरा, पुराना कालीबाड़ी परिसर, गाँव : पोआंग बारी, पो:- रुडी जाला, पीएस:- मेलाघर, सिपाहीजला, त्रिपुरा का भ्रमण किया।

रानावि वाराणसी केन्द्र (उत्तर प्रदेश)

- **वाराणसी (उत्तर प्रदेश) केन्द्र** द्वारा शैक्षणिक सत्र 2023-24 प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण की गई। कमेटी द्वारा इस सत्र के 20 छात्रों का चयन किया गया : अभिषेक राणा, अरुण कुमार, आशुतोष उपाध्याय, कन्या, खुशबू, जया अदक, देवव्रत अमोल, नदितमा कुमारी, प्रणव सिंह गौर, बंटी, मधुसूदन, मानसी रावत, रमाशंकर यादव, राहुल प्रजापति, रिया कुमारी, वर्षा कुमारी, शाहिल कुमार, शिवांगी त्रिपाठी, श्रेया अम्बष्ठ, समीर शर्मा।

- वाराणसी (उत्तर प्रदेश) केन्द्र के छात्रों को जुलाई से दिसम्बर, 2024 के मध्य बिखरे किस्से, घनपथ, अभिनय, चारी, हस्त और पद, योग, भारतीय अभिनय प्रशिक्षण पद्धति, भारतीय अभिनय प्रशिक्षण पद्धति, शास्त्रीय भारतीय नाटक, रंगमंच खेल, प्रकाश परिकल्पना, बिदेसिया पर दृश्यबंध, थांगटा, योग, कुडियट्टम, स्व – अभ्यास, गति, भारतीय शास्त्रीय रंगमंच और ब्रेख्त का रंगमंच आदि विषय केंद्रित प्रशिक्षण दिए गए।

- इस निर्धारित समयावधि में देश के जाने-माने रंग प्रशिक्षक आनंद किशोर मिश्रा, कुमारदास टी. एन., जयंतपथी त्रिपाठी, डॉ. प्रेचंद होमबल, पियाल भट्टाचार्य, प्रवीण कुमार गुंजन, प्रवीण कुमार, प्रो. सुरेश भारद्वाज, मधु ए. के. (मर्गी मधु), डॉ. इंदु जी. नायर और मणिकंदन, वी. एस., रितेश दुबे, रोहिताश गौड़, विवेक इमामेमि, संगीता शर्मा, संजय उपध्याय, सलाम बिश्वजीत सिंह आदि केन्द्र के छात्रों को प्रशिक्षिण दिए।

- **स्वतंत्रता दिवस** समारोह का आयोजन – 15 अगस्त 2024.
- **उत्तररामचरित** का प्रदर्शन – 15 सितंबर, 2024.
- सुश्री भागीरथी बाई द्वारा '**शाकुंतला के साथ एक दोपहर**' – 26 सितंबर, 2024
- **वायवा** – 01 अक्तूबर, 2024.
- **कुडियट्टम** का प्रदर्शन शाकुंतल स्टूडियो – 23 नवम्बर, 2024.

समारोह प्रभाग

इस दौरान समारोह प्रभाग द्वारा निम्न कार्य समादित किए गए :

- ‘रंग अम्लान’ (दिल्ली पर्यटन और परिवहन विकास निगम लिमिटेड के सहयोग से) का अभिमंच सभागार में समापन समारोह – 02 जुलाई, 2024.
- भारत रंग महोत्सव – 2025 के लिए प्रथम फेज़ का स्क्रीनिंग कार्य – 15 से 20 अक्तूबर 2024.
- भारत रंग महोत्सव – 2025 के लिए विदेशी नाटकों का स्क्रीनिंग कार्य – 21 से 27 अक्तूबर 2024.
- भारत रंग महोत्सव – 2025 के लिए द्वितीय फेज का स्क्रीनिंग का कार्य – 22 से 23 अक्तूबर 2024.
- भारत रंग महोत्सव 2025 के लिए चयनित भारतीय तथा विदेशी 75 नाटकों की सूची वेबसाइट पर अपलोड की गई।

विविध आयोजन

- स्वच्छता अभियान का आयोजन – 17 सितंबर 2024 से 02 अक्टूबर 2024.
- स्वच्छता अभियान पर नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन – 02 अक्टूबर 2024.
- विद्यालय के कर्मचारी कल्याण कोष द्वारा सामूहिक मिलन समारोह – 15 दिसंबर, 2024.
- गुरुग्राम में इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. के कर्मचारियों के लिए थिएटर कार्यशाला का – 09 से 13 दिसंबर 2024, जिसमें निम्न नाटक प्रदर्शित किए गए :
  - » रूप अरूप - स्वर्गीय त्रिपुरारी शर्मा द्वारा निर्देशित
  - » चलो डोजोमोजो ढूँढते हैं - मुस्कान द्वारा निर्देशित
  - » मिराज - रणधीर कुमार द्वारा निर्देशित
  - » गुन्नू बाई - चित्तरंजन त्रिपाठी द्वारा निर्देशित

अभिरंग

अंक : 06 एवं 07 (संयुक्तांक)

जुलाई - दिसंबर, 2024

• राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय •